# [ गुण ]

↓

काव्य के शोभाकारक धर्म गुण कहलाते हैं।

[ 3-प्रकार ]

## प्रसाद

↓

जो चित्त को प्रसन्न करे। समस्त रसों एवं समस्त रचनाओं में होता है।

↓

Ex - नर हो न निराश करो मन को।

## ओज

↓

जहाँ वीर रस होता है।

↓

चढ़ चेतक पर.....

## माधुर्य

↓

जहाँ पर ः की मात्रा का प्रयोग/ पंचमाक्षरों का प्रयोग होता है।

↓

Ex - मंगल भवन अमंगल हारी।

# शब्द शक्तियाँ

↓

शब्द का अर्थ बोध कराने वाली शक्ति ही शब्द शक्ति कहलाती है।

↓

**प्रकार**

## आभिधा

↓

जिससे मुख्य अर्थ का बोध हो।

↓

जैसे – तुम हँसते हो।

## लक्षणा

↓

जिसके माध्यम से लक्ष्यार्थ तक पहुँचते हैं।

↓

जैसे

↓

रामू बैल है।

↓

यहाँ हम लक्षण से अर्थ ग्रहण कर रहे हैं।

## व्यंजना

↓

लक्ष्यार्थ के जानने से पहले हम व्यंग्यार्थ नहीं समझ सकते। जहाँ लक्ष्यार्थ के माध्यम से अर्थ को समझा जाए।

↓

Ex- रात के 9 बज रहे हैं।